International Journal of Jyotish Research: 2018; 3(2): 15-16

International Journal of Jyotish Research
(वेदचक्षु)

ISSN: 2456-4427
Impact Factor: RJIF: 5.11
Jyotish 2018; 3(2): 15-16
© 2018 Jyotish
www.jyotishajournal.com
Received: 15-05-2018
Accepted: 17-06-2018

डॉ. अशोक सैनी
संस्कृत राजस्थान विश्वविद्यालय
जयपुर, राजस्थान, भारत

Correspondence
डॉ. अशोक सैनी
संस्कृत राजस्थान विश्वविद्यालय
जयपुर, राजस्थान, भारत

वेदों में प्रार्थना तथा नमन

डॉ. अशोक सैनी

प्रस्तावना

प्रार्थना में प्रार्थनीय शक्ति के आगे प्रणत होने का अत्यन्त महत्व है। किसी के आगे झुकने से उसके प्रति श्रद्धा उत्पन्न होती है और भावोद्रेक से हृदय आह्लादित हो जाता है, उस समय जो वचन मुख से स्फुटित होते हैं, वे अन्तरात्मा का स्पर्श किये हुए होते हैं और यर्थाथ रूप से प्रार्थना करने वाले व्यक्ति का भाव स्पष्ट करने में सक्षम होते हैं।

नमन करने से निरभिमानिता प्रकट होती है। अभिमानी व्यक्ति किसी के सम्मुख मस्तक नहीं झुकाता, परन्तु अभिमानपूर्ण होकर व्यक्ति किसी का प्रियपात्र नहीं हो सकता। उसमें गर्व के आधिक्य के कारण श्रद्धा का प्रवेश नहीं हो सकता और उपासना में श्रद्धा मूल है। श्रद्धा सदाचारी का गुण है। सदाचारी व्यक्ति सदैव विनम्र होता है।

वैदिक आर्य सदाचारी थे, विनम्र थे। वे नमस्कार का महत्व जानते थे। वेद के एक मन्त्र में ऋषि का नमस्कार के विषय में कथन है ''नमस्कार सबसे बड़ी वस्तु है, इसीलिए मैं नमस्कार करता हूं। नमस्कार ही स्वर्ग और पृथ्वी को धारण करता है, इसलिए मैं देवों को नमस्कार करता हूं। देवता लोगा नमस्कार के वशीभूत हैं, इसीलिए मैं नमस्का द्वारा किये हुए पापों का प्रायश्चित करता हूं।''[1]

अथर्ववेद के एक मन्त्र में भी नमस्करणीय देवों को नमस्कार करने का उल्लेख हुआ है ''मन (श्रद्धा–भक्ति), होमों, तेज और घृत के द्वारा अस्त्र फेंकने वाले शर्व और राजा भव के लिए तथा अन्य भी नमस्करणीय देवों के लिये मैं नमस्कार करता हूं। वे सब इन पाप से भरी हुई पापकृत्याओं को दूर करें।''[2]

एक अन्य वेद–मन्त्र में ऋषि द्वारा हार्दिक नमः का उल्लेख है ''हे अग्नि, हम अनुदिन, दिन–रात अन्तस्तल के साथ तुम्हें नमस्कार करते हुए तुम्हारे पास आते हैं।'' [3] अन्यत्र वेद में नमः द्वारा वरूण के क्रोध को दूर करने की बात कही गई है ''हे वरूण नमस्कार करके हम तुम्हारे क्रोध को दूर करते हैं।''[4] इसी प्रकार ऋगवेद के एक मन्त्र में नमः शब्द के उच्चारण के साथ इन्द्र की स्तूति का निर्देश है। [5] सविता देव को सम्बोधित एक मन्त्र में नमस्कार द्वारा आह्वान किया गया है–''द्युतिमान सविता को कल्याण के लिए हम नमस्कार द्वारा आह्वान करते है। [6]

एक अन्य वेद–मन्त्र में प्राणियों के शुभचिन्तक देवों को नमस्कार किया गया है ''सूर्या, देवगण, मित्र और वरूण, जो प्राणियों के हितैषी हैं उन्हें मैं नमस्कार करता हूं। [7]

एक स्थान पर अग्नि को अप्रतिविद्ध और अनाधृष्ट कहकर नमस्कार किया गया है। [8] माता पृथ्वी को नमस्कार करके उससे हिंसा न करने की प्रार्थना है ''माता पृथ्वी को नमस्कार है, माता पृथ्वी की मैं हिंसा न करूं, हे पृथ्वी माता मेरी हिंसा न करो।'' [9]

तात्पर्य यही है कि पृथ्वी को नमस्कार करने का अभिप्राय पृथ्वी पर रहने वाले प्राणियों से है; अतः राजा या सामान्य भी कोई पुरूष पृथ्वी पर रहने वाले प्राणियों की हिंसा न करे और न ही अन्य प्राणी उसकी हिंसा करें। वह पृथ्वी माता को नमस्कार करने के ब्याज से सभी प्राणियों को ही नमन करता है।

नमस्कार के महत्व के कारण ही यजुर्वेद में संसार के प्रत्येक पदार्थ के प्रति नमस्कार प्रदर्शित किया गया है। [10]

इस प्रकार स्पष्ट है कि प्रार्थना में प्रणति का होना आवश्यक भी है और शुभफलदायी भी। जीवन के प्रत्येक क्षण, प्रत्येक पदार्थ के आगे प्रणत होने का यजुर्वेद का वास्तविक उद्देश्य निरभिमानिता है और इस प्रणति से प्रणत को लाभी भी होता है। जब सांसारिक वस्तुओं के आगे झुकना लाभदायी है तो परम सत्ता के सम्मुख झुकना, जिसके द्वारा सभी सांसारिक वस्तुएं सृष्ट हैं, अवश्यमेव अनिवार्य एवं शुभफलदायी होगा।

वेद में अनेक स्थलों पर प्रार्थना सम्बन्धी आचार के संकेत भी प्राप्त होते हैं।

प्रार्थना के लिए मनुष्य का चरित्र अच्छा होना, चरित्र ऊँचा होना अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि सच्चरित्र के बिना जो प्रार्थना की जाती है, बार–बार जो (बिना कार्रू के 'सच्चरित्र' के) केवल नमस्कार

किया जाता है उससे ईश्वर क्रुद्ध होता है। [11] इसी प्रकार प्रार्थना करते समय जो दूषित ढंग से स्तूति की जाती है और ईश्वर के साथ–साथ अन्य सांसारिक प्राणियों की भी स्तुति की जाती है वह भी प्रार्थना संबंधी आचार के अनुकूल नहीं है। एक मंत्र में यह भी कहा गया है कि हे रूद, हम कवि अथवा दान की भावना से युक्त होकर आपका आह्वान करते है। [12] इसका अभिप्रया यह है कि प्रार्थी के आचार में दानशीलता का होना भी अत्यन्त आवश्यक है।

रूद्र को वेदों में क्षयद्वीर कहकर सम्बोधित किया गया है जिसका तात्पर्य है कि उसमें (रूद्र में) वीरों का निवास है। अर्थात् वीर या कर्मशील व्यक्ति ही ईश्वर से प्रार्थना के अधिकारी है। [13] इसके साथ ही यह भी आवश्यक है कि प्रार्थी परमेश्वर की स्तुतियों को स्मरण रखें और प्रार्थना करने से पूर्व उन्हें प्रस्तुत करें। [14]

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि वैदिक कार्यो का जीवन उपासनामय था। वे ईश्वर के प्रति सदैव विनत भाव से उसके अनुग्रह को प्राप्त करके ही अपने जीवन के क्रिया–कलापों को पूर्ण करते थे और अन्त में मोक्ष की प्राप्ति भी करते थे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. ऋ0 6 ।51 ।8
2. अथर्व0 9 ।93 ।2
3. ऋ0 1 ।1 ।7; साम0 1 ।14; वा0 सं0 3122; तै0 सं0 1 ।5 ।6 ।2; मै0 सं0 1 ।5 ।3; 1 ।5 ।10; 78 ।9; कठशा0 7 ।1 ।8; 22 ।10
4. ऋ0 1 ।24 ।14; तै0 सं0 1 ।5 ।11 ।3; मै0 सं0 4 ।10 ।4; 153 ।10; 4 ।14 ।17;246 ।7; कठशा0 40 ।11
5. ऋ0 2 ।21 ।2
6. ऋ0 2 ।38 ।9
7. ऋ0 10 ।85 ।17; अथर्व0 14 ।2 ।46
8. तै0 सं0 1 ।5 ।10 ।3
9. तै0 सं0 1 ।8 ।15 ।10; वा0 सं0 9 ।22; मै0 सं0 1 ।9 ।1; 131 ।13; 2 ।6 ।12; 71;4; 4 ।4 ।6; 56 ।10; कठशा0 15 ।5
10. वा0 सं0 16 ।17–48 मंत्र; तै0 सं0 4 ।45 ।1–9 अनुवाक नमः के हैं।
11. ऋ0 2 ।33 ।4
12. ऋ0 1 ।114 ।8; वा0 सं0 16 ।16; तै0सं0 3 ।4 ।11 ।2; 4 ।5 ।10 ।3; मै0 सं0 4 ।12 ।6; का0 सं0 23 ।12
13. ऋ0 1 ।114 सूक्त
14. ऋ0 1 ।114 ।9